चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	20.02.23	3	1-5

'जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए करने होंगे कई बदलाव'

जलवायु परिवर्तन से कृषि के साथ आम-आदमी भी प्रभावित : प्रो. काम्बोज

हिसार, 19 फरवरी (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन हुआ। इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे व विशिष्ट अतिथि आईसी एंड सीसी जर्मनी के एम.डी. डॉ. मेनफेर्ड कर्न मौजूद रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों की आय व खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा है, जिसका असर आम-आदमी पर भी पड़ने लगा है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार ऐसी किस्में विकसित कर रहे हैं, जो तापरोधी, रोगरोधी व कम जलापूर्ति पर भी पोषण से भरपूर व अधिक पैदावार देने में सक्षम हैं, जिसमें हाल ही में विकसित गेहूं, मक्का, गन्ना, राया, बॉयोफोर्टीफाइड बाजरा, ज्वार, जई, मटर, चना व फाबाबीन की किस्में शामिल है।

जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए व भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए मृदा के ऑर्गेनिक कार्बन को बढ़ाना, फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खेत में ही मिलाना, फसल विविधिकरण अपना, क्लाईमेट स्मार्ट तकनीक जिसमें टपका सिंचाई, फव्वारा सिंचाई, प्रिशिजन खेती, आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग, लेजर लेवलिंग, जीरो टिलेज व ड्रोन का इस्तेमाल भी शामिल है। जलवायु परिवर्तन से दुष्प्रभाव से बचने के लिए हमें प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण इस्तेमाल, जिसमें कृषि एवं पशुपालन के संदर्भ में उत्पादकता को बनाए रखने हेतु व कृषि क्षेत्र में आर्थिक सुरक्षा को बनाए रखने हेतु एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना होगा।

स्विट्जरलैंड के वैज्ञानिक को सम्मानित करते कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज।

सम्मेलन में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. एस.के. पाहुजा ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर सम्मलेन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों को विशेषज्ञों की कमेटी द्वारा मूल्यांकन के आधार पर वोमेंटो व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए।

कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत : डा. मेनफेर्ड

आई.सी. एंड सी.सी. जर्मनी के एम.डी. डॉ. मेनफेर्ड कर्न ने बताया कि कृषि विज्ञान, सभी विज्ञान शाखाओ की मदर है। पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं काफी बढ़ी है। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत है। इस सम्मेलन में अगले 50 वर्षों में कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी।

ऐसी कृषि पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिनसे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में मदद मिले। गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता खाद्यान्न व चारे की सुरक्षा व स्थिरता के लिए बेहद जरूरी है। ऐसे सम्मेलन में भाग लेने से शोध छात्रों को नैतिकता व ईमानदारी के साथ किसानों के हित में काम करने की प्रेरणा मिलती है।

वैज्ञानिकों की राय

जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसमें मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे बर्फबारी का कम होना, सुखापन, बाढ़ इत्यादि शामिल है। वैज्ञानिकों ने कई सुझाव सम्मेलन में दिए हैं।

- जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए जंगली या पारंपरिक बीजों का नई तकनीक के साथ इस्तेमाल करना होगा। फसलों की जंगली व देशी किस्मों में रोग प्रतिरोधक क्षमता व मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव से लड़ने की शक्ति होती है।
- सूक्ष्म जीव ग्रीन हाऊस गैसों को कम करने व दूषित पानी को स्वच्छ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- दलहनीय फसलें वातावरण के संतुलन को बनाए रखने में बहुत उपयोगी है। ये फसलें वातावरण से नाईट्रोजन को लेकर पौधों तक पहुंचाती है और सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ाकर मिट्टी की गुणवत्ता को बनाए रखने में मददगार साबित होती हैं।
- जिस प्रकार से मौसम में बदलाव हो रहा है उसको देखते हुए कम तापमान की फसलों की ओर ध्यान देना होगा।
- कृषि में जीवाश्म आधारित ईंधन की बजाय जैव व पादप आधारित ईंधनों के इस्तेमाल को अपनाना होगा। इससे ग्रीन हाऊस गैसों को कम करने में मदद मिलेगी।
- अप्रत्याशित मौसम का बदलाव फसलों के लिए बहुत ही हानिकारक साबित हो रहा है। इसलिए कार्बन का संरक्षण व दूरदर्शी योजना बनाकर जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटा जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	20.02.23	3	2-5

जलवायु परिवर्तन से कृषि के साथ आमजन प्रभावित

जागरण संवाददाता, हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन हुआ। इस दौरान मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज रहे व विशिष्ट अतिथि आइसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डा. मेनफेर्ड कर्न मौजूद रहे। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों की आय व खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा है, जिसका असर आम-आदमी पर भी पड़ने लगा है।

उज्बेकिस्तान की वैज्ञानिक को सम्मानित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। ● पीआरओ

जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार ऐसी किस्में विकसित कर रहे हैं, जो तापरोधी, रोगरोधी व कम जलापूर्ति पर भी पोषण से भरपूर व अधिक पैदावार देने में सक्षम हैं। जिसमें हाल ही में विकसित गेहूं, मक्का, गन्ना, राया, बायोफोर्टीफाइड बाजरा, ज्वार, जई, मटर, चना व फाबाबीन की किस्में शामिल है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए व भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए मृदा के आर्गेनिक कार्बन को बढ़ाना, फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खेत में ही मिलाना, फसल विविधिकरण अपना, क्लाईमेट स्मार्ट तकनीक जिसमें टपका सिंचाई, आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग, लेजर लेवलिंग, जीरो टिलेज व ड्रोन का इस्तेमाल भी शामिल है। जलवायु परिवर्तन से दुष्प्रभाव से बचने के लिए हमें प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण इस्तेमाल जिसमें कृषि एवं पशुपालन के संदर्भ में उत्पादकता के बनाए रखने हेतु व कृषि क्षेत्र में आर्थिक सुरक्षा को बनाए रखने हेतु एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना होगा। आइसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डा. मेनफेर्ड कर्न ने बताया कि कृषि विज्ञान, सभी विज्ञान शाखाओं की मदर है। पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं काफी बढ़ी है। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत है। सम्मेलन में अगले 50 वर्षों में कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी। ऐसी कृषि पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिनसे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में मदद मिले। गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता खाद्यान्न व चारे की सुरक्षा व स्थिरता के लिए बेहद जरूरी है। ऐसे सम्मेलन में भाग लेने से शोध छात्रों को नैतिकता व ईमानदारी के साथ किसानों के हित में काम करने की प्रेरणा मिलती है। सम्मेलन में अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डा. एसके पाहुजा ने सम्मेलन की रिपोर्ट प्रस्तुत की। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डा. केडी शर्मा ने अतिथियों का आभार जताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	20.02.23	2	6-8

जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव से बचने के लिए अपनानी होगी एकीकृत कृषि प्रणाली : प्रो. कांबोज

एचएयू में चल रहे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किए गए एक हजार से अधिक शोध पत्र

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता विषय पर चल रही तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का रविवार को समापन हुआ।

सम्मेलन में एक हजार से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। 12 विषयों पर विशेषज्ञों ने अपने व्याख्यान दिए। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली पर जोर दिया।

रविवार को विश्वविद्यालय के इंदिरा गांधी ऑडिटोरियम में आयोजित सम्मलेन में कुलपति ने कहा कि जलवायु परिवर्तन खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा है, जिसका असर किसानों की आय पर पड़ता है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार ऐसी किस्में विकसित कर रहे हैं, जो तापरोधी, रोगरोधी व कम जल

एचएयू में सम्मेलन में स्विट्जरलैंड की वैज्ञानिक को सम्मानित करते कुलपति। संवाद

उपलब्धता पर भी पोषण से भरपूर व अधिक पैदावार देने में सक्षम हैं। हमें प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण इस्तेमाल पर ध्यान देना होगा। कृषि क्षेत्र में आर्थिक सुरक्षा को बनाए रखने के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना होगा।

विशिष्ट अतिथि आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न ने कहा कि पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं बढ़ी हैं। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत है। सम्मेलन से अगले 50 वर्षों तक की कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी। ऐसी कृषि पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिनसे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में मदद मिले। गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता खाद्यान्न व चारे की सुरक्षा व स्थिरता के लिए बेहद जरूरी है। ऐसे सम्मेलन में भाग लेने से शोध छात्रों की नैतिकता व ईमानदारी के साथ किसानों के हित में काम करने की प्रेरणा मिलती है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. एसके पाहुजा ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर सम्मलेन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों को विशेषज्ञों की कमेटी द्वारा मूल्यांकन के आधार पर स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा ने उपस्थित अतिथिगणों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	20.02.23	4	3-8

हिसार। सुरेंद्र रोमियो व राधिका मोर और विद्यार्थियों ने दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां व उज्जबेकिस्तान की वैज्ञानिक को सम्मानित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। फोटो : हरिभूमि

कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन की जरूरत

हिसार। हकृवि में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा व स्थिरता विषय पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन हुआ। इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे व विशिष्ट अतिथि आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न मौजूद रहे। आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न ने बताया कि कृषि विज्ञान, सभी विज्ञान शाखाओं की मदर है। पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं काफी बढ़ी है। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत है। इस सम्मेलन में अगले 50 वर्षों में कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी। ऐसी कृषि पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिनसे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में मदद मिले। गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता खाद्यान्न व चारे की सुरक्षा व स्थिरता के लिए बेहद जरूरी है। ऐसे सम्मेलन में भाग लेने से शोध छात्रों को नैतिकता व ईमानदारी के साथ किसानों के हित में काम करने की प्रेरणा मिलती है। एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों की आय व खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा है। इसके दुष्प्रभावों से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक तापरोधी, रोगरोधी व कम जलापूर्ति पर भी पोषण से भरपूर व अधिक पैदावार देने में सक्षम फसलें विकसित करें।

निदेशक ने सम्मेलन की रिपोर्ट पेश की

सम्मेलन में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. एसके पाहुजा ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर सम्मलेन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों को विशेषज्ञों की कमेटी द्वारा मूल्यांकन के आधार पर वोमेंटो व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए। अंत में स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा उपस्थित रहे।

देशी गानों पर विदेशी मेहमानों ने लगाए ठुमके

विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में कल्चरल इवी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बॉवर व डॉ. मेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्बर, स्वीडन की डॉ. मोनिका बागा, पोलेंड के डॉ. लुकाजे, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्याकांत, डॉ. ए.के जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने ढोल जगीरो दा व देशी गानों पर जमकर ठुमके लगाए, जिस पर तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	20.02.23	5	3-6

जलवायु परिवर्तन से कृषि के साथ आम-आदमी भी प्रभावित : प्रो. काम्बोज

जर्मनी के वैज्ञानिक डॉ. मैनफेर्ड ने कहा कि कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत

हिसार, 19 फरवरी (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन हुआ। इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे व विशिष्ट अतिथि आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न मौजूद रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों की आय व खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा है, जिसका असर आम-आदमी पर भी पड़ने लगा है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार ऐसी किस्में विकसित कर रहे हैं, जो तापरोधी, रोगरोधी व कम जलापूर्ति पर भी पोषण से भरपूर व अधिक पैदावार देने में सक्षम हैं, जिसमें हाल ही में विकसित गेहूं, मक्का, गन्ना, राया, बॉयोफोर्टीफाइड बाजरा, ज्वार, जई, मटर, चना व फाबाबीन की किस्में शामिल है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए व भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए मृदा के ऑर्गेनिक कार्बन को बढ़ाना, फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खेत में ही मिलाना, फसल विविधिकरण अपना, क्लाईमेट स्मार्ट तकनीक जिसमें टपका सिंचाई, फव्वारा सिंचाई, प्रिशिजन खेती, आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग, लेजर लेवलिंग, जीरो टिलेज व ड्रोन का इस्तेमाल भी शामिल है। जलवायु परिवर्तन से दुष्प्रभाव से बचने के लिए हमें प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण इस्तेमाल जिसमें कृषि एवं पशुपालन के संदर्भ में उत्पादकता के बनाए रखने हेतु व कृषि क्षेत्र में आर्थिक सुरक्षा को बनाए रखने हेतु एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना होगा।

कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज उज्बेकिस्तान के वैज्ञानिक को सम्मानित करते हुए।

आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न ने बताया कि कृषि विज्ञान, सभी विज्ञान शाखाओ की मदर है। पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं काफी बढ़ी है। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत है। इस सम्मेलन में अगले 50 वर्षों में कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी।

सम्मेलन में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. एसके पाहुजा ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर सम्मलेन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों को विशेषज्ञों की कमेटी द्वारा मूल्यांकन के आधार पर वोमेंटो व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	20.02.23	8	4-5

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन संपन्न

जलवायु परिवर्तन से कृषि के साथ आम आदमी भी प्रभावित : कुलपति

हिसार, 19 फरवरी (जिस)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता विषय पर 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन पर बोलते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि जलवायु परिवर्तन किसानों की आय व खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा है, जिसका असर आम आदमी पर भी पड़ने लगा है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न भी मौजूद थे।

कुलपति ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार ऐसी किस्में विकसित कर रहे हैं, जो तापरोधी, रोगरोधी व कम जलापूर्ति पर भी पोषण से भरपूर व अधिक पैदावार देने में सक्षम हैं, जिसमें हाल ही में विकसित गेहूं, मक्का, गन्ना, राया, बॉयोफोर्टीफाइड बाजरा, ज्वार, जई, मटर, चना व फाबाबीन की किस्में शामिल है।

जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए व भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए मृदा के ऑर्गेनिक कार्बन को बढ़ाना, फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खेत में ही मिलाना, फसल विविधिकरण अपना, क्लाईमेट स्मार्ट तकनीक जिसमें टपका सिंचाई, फव्वारा सिंचाई, प्रिशिजन खेती, आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग, लेजर लेवलिंग, जीरो टिलेज व ड्रोन का इस्तेमाल भी शामिल है।

आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न ने बताया कि कृषि विज्ञान, सभी विज्ञान शाखाओं की मदर है। पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं काफी बढ़ी है। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत है। इस सम्मेलन में अगले 50 वर्षों में कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी। ऐसी कृषि पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिनसे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में मदद मिले। सम्मेलन में अनुसंधान निदेशक डॉ जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ एसके पाहुजा ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। अंत में स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ केडी शर्मा ने उपस्थित अतिथिगणों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	20.02.23	3	3-5

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह के अवसर पर संबोधित करते एचएयू के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज।

डॉ. मेनफेर्ड बोले-कृषि शोध को दूरदर्शी विजन की जरूरत

कुलपति बोले-जलवायु परिवर्तन खाद्यान्न उत्पादन को कर रहा प्रभावित

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का रविवार को समापन हो गया।

इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे व विशिष्ट अतिथि आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न आदि उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों की आय व खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा है, जिसका असर आम आदमी पर भी पड़ने लगा है।

गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता जरूरी

आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न ने बताया कि कृषि विज्ञान, सभी विज्ञान शाखाओं की मदर है। पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं काफी बढ़ी हैं। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन की जरूरत है। इस सम्मेलन में अगले 50 वर्षों में कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी। ऐसी कृषि पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिनसे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में मदद मिले। गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता खाद्यान्न व चारे की सुरक्षा व स्थिरता के लिए बेहद जरूरी है।

सम्मेलन में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. एसके पाहुजा ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर सम्मलेन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों को विशेषज्ञों की कमेटी द्वारा मूल्यांकन के आधार पर मोमेंटो व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए। अंत में स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा ने उपस्थित अतिथिगणों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	19.02.2023	--------	--------

कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत : डॉ. मेनफेर्ड

पांच बजे ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में ''जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता'' विषय पर 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन हुआ। इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे व विशिष्ट अतिथि आईसी एंड सीबी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफ्रेड कर्न मौजूद रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों की आय व खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा है, जिसका असर आम-आदमी पर भी पड़ने लगा है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार ऐसी किस्में विकसित कर रहे हैं, जो तापरोधी, रोगरोधी व कम लागतों पर भी पोषण से भरपूर व अधिक पैदावार देने में सक्षम हैं, जिनमें हाल ही में विकसित गेहूं, मक्का, नरमा, राया, बायोफोर्टीफाइड बाजरा, ज्वार, जई, मटर, चना व पशुचारे की किस्में शामिल हैं। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए व भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए मृदा के ऑर्गेनिक कार्बन को बढ़ाना, फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खेत में ही मिलाना, फसल विविधिकरण अपना, क्लाइमेट स्मार्ट तकनीक जिसमें टपका सिंचाई, फव्वारा सिंचाई, प्रिसिजन खेती, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग, लेजर लेवलिंग, जीरो टिलेज व ड्रोन का इस्तेमाल भी शामिल है। जलवायु परिवर्तन से दुष्प्रभाव से बचने के लिए हमें प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण इस्तेमाल जिसमें कृषि एवं पशुपालन के संदर्भ में उत्पादकता के बनाए रखने हेतु व कृषि क्षेत्र में आर्थिक सुरक्षा को बनाए रखने हेतु एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना होगा।

आईसी एंड सीबी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफ्रेड कर्न ने बताया कि कृषि विज्ञान सभी विज्ञान शाखाओं की मदर है। पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं काफी बढ़ी है। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत है। इस सम्मेलन में अगले 50 वर्षों में कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी। ऐसी कृषि पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिनसे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में मदद मिले। गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता खाद्यान्न व पोषण की सुरक्षा व स्थिरता के लिए बेहद जरूरी है। ऐसे सम्मेलन में भाग लेने से शोध छात्रों को नैतिकता व ईमानदारी के साथ किसानों के हित में काम करने की प्रेरणा मिलती है।

सम्मेलन में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. एसके पाहुजा ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों की विशेषज्ञों की कमेटी द्वारा मूल्यांकन के आधार पर ट्रॉफी व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए। अंत में स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. के.डी शर्मा ने उपस्थित अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	20.02.23	2	1-4

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन : एचएयू में भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कल्चरल इवनिंग

देशी गानों पर झूमे विदेशी मेहमान

सिटी रिपोर्टर | एचएयू में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर मंथन चल रहा है, जिसमें विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि कॉलेज के ऑडिटोरियम में कल्चरल इवनिंग इवेंट आयोजित की। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बॉर्नर व डॉ. मेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्बर, स्वीडन की डॉ. मोनिका बागा, पौलेंड के डॉ. लुकार्ज, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्याकांत, डॉ. एके जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने ढोल जगीरो दा व देशी गानों पर जमकर ठुमके लगाए, जिस पर तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उपस्थित प्रतिभागियों ने उत्साह बढ़ाया। विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों ने महाशिवरात्रि पर्व पर शिव स्तुति कर कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सेठी ने सर्वप्रथम शिव नृत्य कर सभी का मनमोह लिया। कलाकारों ने कत्थक, सूफी, भंगड़ा, फोक इंडियन डांस, रागिनी की बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात व हरियाणा की संस्कृति से विदेशी मेहमानों से रूबरू करवाया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र भंगड़ा, राजस्थानी व सेमी क्लासिकल डांस रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	20.02.23	2	1-4

विदेशी मेहमानों ने देशी गानों पर लगाए ठुमके

जागरण संवाददाता, हिसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता विषय पर मंथन चल रहा है। इससे विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के आडिटोरियम में कल्चरल इवी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बार्नर व डा. मेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्बर, स्वीडन की डा. मोनिका बागा, पौलेंड के डा. लुकार्ज, आस्ट्रेलिया के डा. सूर्याकांत, डा. एके जोशी, अमेरिका के डा. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने ढोल जगीरो दा व देशी गानों पर जमकर ठुमके लगाए। विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों ने महाशिवरात्रि पर्व पर शिव स्तुति कर कार्यक्रम की शुरुआत की। इसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सेठी ने शिव नृत्य कर सभी का मन-मोह लिया। कलाकारों ने कत्थक, सूफी, भांगड़ा, फाक इंडियन डांस, रागनी की बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात तथा हरियाणा की संस्कृति से रूबरू कराया।

हकृवि में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते विद्यार्थी । • जागरण

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	20.02.23	3	1-2

हकृवि में आयोजित कल्चरल ईव में देशी गानों पर झूमे विदेशी मेहमान

हिसार, 19 फरवरी (राठी): हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर मंथन चल रहा है, जिसमें विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ओडिटोरियम में कल्चरल ईव कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बॉनर व डॉ. मेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्बर, स्वीडन की डॉ. मोनिका बागा, पौलेंड के डॉ. लुकार्ज, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्याकांत, डॉ. ए.के जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने ढोल जगीरो दा व देशी गानों पर जमकर ठुमके लगाए, जिस पर तालियों की गड़गड़हाहट के साथ उपस्थित प्रतिभागियों ने वन्स मोर-वन्स मोर चिल्लाकर कार्यक्रम का लुत्फ उठाया।

विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों ने महाशिवरात्रि पर्व पर शिव स्तुति कर कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सेठी ने सर्वप्रथम शिव नृत्य कर सभी का मन-मोह लिया। कलाकारों ने कत्थक, सूफी, भंगड़ा, फॉक इंडियन डांस, रागनी की बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात व हरियाणा की संस्कृति से विदेशी मेहमानों से रूबरू करवाया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र भंगड़ा, राजस्थानी व सेमी क्लासिकल डांस रहे।

लोकल गानों पर नाचते विदेशी मेहमान व अन्य।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	20-02-23	5	6-8

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन : हकृवि में आयोजित कल्चरल ईव में विदेशी मेहमानों ने देशी गानों पर लगाए ठुमके

हिसार, 19 फरवरी (विरेंद्र वर्मा): हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर मंथन चल रहा है, जिसमें विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में कल्चरल इवी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बॉर्नर व डॉ. मेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्बर, स्वीडन की डॉ. मोनिका बागा, पौलेंड के डॉ. लुकार्ज, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्याकांत, डॉ. ए.के जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने ढोल जगीरो दा व देशी गानों पर जमकर ठुमके लगाए, जिस पर तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उपस्थित प्रतिभागियों ने वन्स मोर-वन्स मोर चिल्लाकर कार्यक्रम का लुत्फ उठाया। विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों ने महाशिवरात्रि पर्व पर शिव स्तुति कर कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सेठी ने सर्वप्रथम शिव नृत्य कर सभी का मन-मोह लिया। कलाकारों ने कत्थक, सूफी, भंगड़ा, फॉक इंडियन डांस, रागनी की बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात व हरियाणा की संस्कृति से विदेशी मेहमानों से रूबरू करवाया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	19.02.2023	--------	--------

हकृवि में आयोजित कल्चरल ईव में विदेशी मेहमानों ने देशी गानों पर लगाए ठुमके

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर मंथन चल रहा है, जिसमें विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ओडिटोरियम में कल्चरल इवी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बॉर्नर व डॉ. मेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्बर, स्वीडन की डॉ. मोनिका बागा, पौलेंड के डॉ. लुकार्ज, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्याकांत, डॉ. ए.के जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने ढोल जगीरो दा व देशी गानों पर जमकर ठुमके लगाए, जिस पर तालियों की गडगड़हाहट के साथ उपस्थित प्रतिभागियों ने वन्स मोर-वन्स मोर चिल्लाकर कार्यक्रम का लुत्फ उठाया। विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों ने महाशिवरात्रि पर्व पर शिव स्तुति कर कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सेठी ने सर्वप्रथम शिव नृत्य कर सभी का मन-मोह लिया। कलाकारों ने कत्थक, सूफी, भंगड़ा, फॉक इंडियन डांस, रागनी की बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात व हरियाणा की संस्कृति से विदेशी मेहमानों से रूबरू करवाया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र भंगड़ा, राजस्थानी व सेमी क्लासिकल डांस रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिन्दुस्थान समाचार	19.02.2023	--------	---------

हिसार: एचएयू में आयोजित कल्चरल ईव में विदेशी मेहमानों ने देशी गानों पर लगाए ठुमके

19 Feb 2023 19:04:54

भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए किया सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

हिसार, 19 फरवरी (हि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि के साथ सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर संपन्न हुआ वहीं विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में कल्चरल इवें कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के [illegible] व डॉ. [illegible], कनाडा के प्रो. [illegible], [illegible] की डॉ. [illegible], [illegible] के डॉ. [illegible], ऑस्ट्रेलिया के डॉ. [illegible], अमेरिका के डॉ. [illegible] ने पंजाबी [illegible] व देसी गानों पर जमकर ठुमके लगाए, जिन पर तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उपस्थित प्रतिभागियों ने [illegible] कार्यक्रम का लुत्फ उठाया।

विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों ने [illegible] कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सैनी ने [illegible] का मन मोह लिया। कलाकारों ने [illegible] पंजाब, राजस्थान, गुजरात व हरियाणा की संस्कृति से विदेशी मेहमानों को रूबरू करवाया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र भंगड़ा, राजस्थानी व देसी [illegible] रहे।

हिन्दुस्थान समाचार/राजेश्वर/संजीव

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिसार	20.02.2023	-------	--------

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन : हकृवि में आयोजित कल्चरल ईव में विदेशी मेहमानों ने देशी गानों पर लगाए ठुमके

कृषि महाविद्यालय के ओडिटोरियम में भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने हेतु सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर मंथन चल रहा है, जिसमें विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ओडिटोरियम में कल्चरल इवी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बॉर्नर व डॉ. मेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्बर, स्वीडन की डॉ. मोनिका बागा, पौलेंड के डॉ. लुकार्ज, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्याकांत, डॉ. ए.के जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने ढोल जगीरो दा व देशी गानों पर जमकर ठुमके लगाए, जिस पर तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उपस्थित प्रतिभागियों ने वन्स मोर-वन्स मोर चिल्लाकर कार्यक्रम का लुत्फ उठाया।

विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों ने महाशिवरात्रि पर्व पर शिव स्तुति कर कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सेठी ने सर्वप्रथम शिव नृत्य कर सभी का मन-मोह लिया। कलाकारों ने कत्थक, सूफी, भंगड़ा, फॉक इंडियन डांस, रागनी की बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात व हरियाणा की संस्कृति से विदेशी मेहमानों से रूबरू करवाया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र भंगड़ा, राजस्थानी व सेमी क्लासिकल डांस रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Vision India News	19.02.2023	--------	---------

विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों ने महाशिवरात्रि पर्व पर शिव स्तुति कर कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सेठी ने सर्वप्रथम शिव नृत्य कर सभी का मन-मोह लिया। कलाकारों ने कत्थक, सूफी, भंगड़ा, फोक इंडियन डांस, रागनी की बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात व हरियाणा की संस्कृति से विदेशी मेहमानों से रूबरू करवाया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र भंगड़ा, राजस्थानी व सैनी क्लासिकल डांस रहे।

Related

हरियाणा के हिसार में क्यू आए कनाडा, जापान, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, जर्मनी, उज्बेकिस्तान, फिलिपींस व पोलैंड सहित अनेक देश

जानिए जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं
February 17, 2023
In "Haryana"

प्रो. काम्बोज ने दी क्यू कहा जलवायु परिवर्तन से कृषि के साथ आम-आदमी भी प्रभावित
February 19, 2023
In "Haryana"

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Vision India News	19.02.2023	-------	--------

देखिए विदेशी मेहमानों ने देशी गानों पर हिसार में लगाए ठुमके

विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बॉर्नर व डॉ. लेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्बर, स्वीडन की डॉ. मोनिका बागा, पोलैंड के डॉ. लुकार्ज, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्यकांत, डॉ. ए.के जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने ढोल जगीरो दा व देशी गानों पर जमकर ठुमके लगाए, जिस पर तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उपस्थित प्रतिभागियों ने वन्स मोर-वन्स मोर चिल्लाकर कार्यक्रम का लुत्फ उठाया।

visionindia · 1 min read

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर मंथन चल रहा है, जिसमें विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में कल्चरल इवी कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Vision India News	19.02.2023	--------	--------

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता विषय पर मंथन चल रहा है, जिसमें विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में कल्चरल इवी कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों ने जर्मनी के एंड्रयास बोर्नर व डॉ. मैनफ्रेड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्बर, स्वीडन की डॉ. मोनिका बागा, पोलैंड के डॉ. लुकाज़, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्याकांत, डॉ. ए.के जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने ढोल जगीरो दा व देसी गानों पर जमकर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	20.02.23	5	1-8

जर्मनी के वैज्ञानिक डॉ. मेनफेर्ड ने कहा कि कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत

जलवायु परिवर्तन से कृषि के साथ आम-आदमी भी प्रभावित: प्रो. कंबोज

भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने हेतु सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन